

अनुपम स्मृति - मेरा कुर्ता पकड़कर अब कौन खींचेगा : राजेन्द्र सिंह

By : INVC Team Published On : 29 Dec, 2016 10:20 AM IST

तालाब जितने सुंदर व श्रेष्ठ होंगे, अनुपम की आत्मा उतना सुख पायेगी : राजेन्द्र सिंह

प्रस्तुति : अरुण तिवारी



हम सभी के अपने श्री अनुपम मिश्र नहीं रहे। इस समाचार ने खासकर पानी-पर्यावरण जगत से जुड़े लोगों को विशेष तौर पर आहत किया। अनुपम जी ने जीवन भर क्या किया ; इसका एक अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अनुपम जी के प्रति श्रद्धांजलि सभाओं के आयोजन का दौर इस संवाद को लिखे जाने के वक्त भी देशभर में जारी है। पंजाब-हरियाणा में आयोजित श्रद्धांजलि सभाओं से भाग लेकर दिल्ली पहुंचे पानी कार्यकर्ता राजेन्द्र सिंह ने खुद यह समाचार मुझे दिया। राजेन्द्र जी से इन सभाओं का वृत्तांत जानने 23 दिसम्बर को गांधी शांति प्रतिष्ठान पहुंचा, तो सूरज काफी चढ़ चुका था ; 10 बज चुके थे ; बावजूद इसके राजेन्द्र जी बिस्तर की कैद में दिखे। कारण पूछता, इससे पहले उनकी आंखें भर आईं और आवाज़ भरभरा उठी। कुछ संयत हुए, तो बोले - "यार, क्या बताऊं, शाम को विजय प्रताप जी वगैरह आये थे। अनुपम भाई को लेकर चर्चा होती रही। उसके बाद से बराबर कोशिश कर रहा हूँ, नींद ही नहीं आ रही। अनुपम की एक-एक बात, जैसे दिमाग को मथ रही हैं। चित्त स्थिर ही नहीं हो रहा। क्या करूँ ?"

अनुपम जी - पानी..पर्यावरण की गहरी समझ वाले दूरदृष्टा, राजेन्द्र जी - पानी के अभ्यासक ; मैं समझ गया कि दो पानी वाले रातभर आपस में मिलते रहे हैं। मैं एक लेखक हूँ। इस अनुपम मिलन को जानने और लिखने का लोभ संवरण करना मेरे लिए संभव नहीं हुआ। मैंने राजेन्द्र जी की स्मृति को कुरेदा। जो सुना, वह उसे आप तक पहुंचा रहा हूँ :

प्र. - पंचतत्वों से बने शरीर का एक ही तो सत्य है - मृत्यु....और फिर अनुपम जी अपनी जीवन साधना में जितना कुछ कर गये, ऐसी 

उपलब्धि वाली देह के जाने पर आप जैसे व्यक्ति के मन में दुख से ज्यादा तो कुछ संकल्प आना चाहिए। आप दुखी होंगे, तो कैसे चलेगा ?

उ. - नहीं यार, अभी तो अनुपम भाई की और ज्यादा जरूरत थी हम सभी को। सिद्धराज जी भाईसाहब (प्रख्यात गांधीवादी नेता) के जाने के बाद एक अनुपम ही तो थे, जो मुझे टोकते थे। काम से रोकते नहीं थे, लेकिन टोकते जरूर थे। कहते थे - तुम यह करो। यह मत करो। अब मेरा कुर्ता पकड़कर कौन खींचेगा ? कौन टोकेगा ? (राजेन्द्र फिर भावुक हो गये।) ..अच्छा करो, तो पीठ भी थपथपाते थे। कैसा तो स्वभाव था उनका ! काम की बात पूरी होते ही अक्सर कह उठते थे - "राजेन्द्र, अब अपन की सब बातें हो गईं। कुछ और हो, तो बताओ ; नहीं तो अब जाओ। तुम्हें कई काम होंगे। तुमसे मिलने वाले तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे।" ऐसे स्वभाव वाला व्यक्ति तो अनुपम ही हो सकता

है। कमी तो खलेगी। इतना आसान तो नहीं है, जीपीएफ आने पर अनुपम को भूल जाना।

प्र. - जीपीएफ के वातावरण में इस कमी को कोई तो भरेगा ही ? हम उम्मीद कैसे छोड़ सकते हैं ?

उ. - मुझे याद है, मैं, 1972 में पहली बार रमेश शर्मा जी के साथ यहां, जीपीएफ (गांधी शांति प्रतिष्ठान) आया था। उससे पूर्व रमेश भाई एक स्वैच्छिक कार्यकर्ता के तौर पर हमारे गांव डौला आते-जाते रहते थे। रमेश भाई के माध्यम से ही अनुपम जी से मेरा पहला परिचय हुआ था। 1984 आते-आते हमारा परिचय, गाढ़ी दोस्ती में बदल गया था। अनुपम, पहली बार 1986 में तरुण भारत संघ आये थे। तब से मैं जब भी दिल्ली आता हूं, तो जीपीएफ जरूर आता हूं। जीपीएफ में ही रुकने का प्रयास करता हूं। जीपीएफ आऊं और अनुपम व रमेश भाई जैसे मित्रों से ऊर्जा लिए बगैर चला जाऊं, ऐसा शायद ही कभी हुआ हो। सुबह उठकर अनुपम से मिलना तो मेरा मुख्य एजेण्डा रहता था। टेबल पर आमने-सामने हम कभी शांत नहीं बैठते थे। उनके साथ चर्चा से मैंने निरंतर सीखा है। खासकर, अनुपम जी की सहिष्णुता ने मुझे बहुत सिखाया। अनुपम न हो, तो भी अनुपम के कक्ष में झांककर मैं लौट आता था। उस कक्ष में जाने भर से मुझे ऊर्जा मिलती थी। जीपीएफ में अनुपम और रमेश..दोनों ही मेरे लिए ऊर्जा के केन्द्र थे। आज आया हूं, तो यहां अनुपम भाई नहीं हैं। रमेशभाई भी जीपीएफ से सेवामुक्त हो चुके हैं। मैं आशावान व्यक्ति हूं। आशा करता हूं कि अनुपम के नहीं रहने के बाद, जीपीएफ अनुपम के व्यवहार से सीखेगा। अनुपम के व्यवहार के कारण ही जीपीएफ में अच्छी लोगों की लाइन बनी रही। इसे आगे बनाये रखने की कोशिश करनी चाहिए। व्यक्ति के साथ संस्था न मरे, ऐसी सब गांधीवादी कार्यकर्ताओं की इच्छा माननी चाहिए। अतः मैं तो यही मानता हूं कि यदि गांधी शांति प्रतिष्ठान को जिंदा रहना है, तो अनुपम के व्यवहार को यहां जिंदा रखना होगा। अनुपम, गांधी मार्ग पत्रिका के संपादक मात्र नहीं थे; उनके खान-पान, आचार-विचार, पहनावे में भी गांधीजी की जीवन पद्धति का दर्शन मौजूद था। उनके साथ घूमते हुए.. चिंतन-मनन करते हुए एक सहज-सार्थक जीवंतता का संचार महसूस होता था।

प्र. - आप, अनुपम जी का सबसे बड़ा गुण क्या मानते हैं ?

उ.- अनुपम, एक इनोवेटिव शब्दशिल्पी थे। पानी परम्परा के वह सच्चे शोधार्थी थे। मैं, अनुपम भाई को भारत में पर्यावरण शब्द व्यवहार का जनक मानता हूं। पानी-पर्यावरण क्षेत्र में काम करने वालों के लिए वह किसी साहित्यिक गुरु से कमतर नहीं थे। अनुपम की सबसे खास विशेषता यह थी कि लोग अपने जिस खो गये को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते, अनुपम उसका एहसास करने व कराने वाले व्यक्ति थे। तरुण भारत संघ की पहली पुस्तक 'जोहड़' अनुपम जी ने मुझसे लिखवाई और खुद बैठकर उसे पढ़ने लायक बनाया। शब्दों को रचना आसान हो सकता है, लेकिन वे लोक व्यवहार में भी उतरें, इसके लिए समाज की स्वीकार्यता हासिल करना आसान नहीं होता। इसके लिए शब्दों को समाज के मनोनुकूल परोसना भी आना चाहिए। बिहार की बाढ़, भारत के सुखाड़ व नदी जोड़ पर लिखे उनके तीन लेख तथा आज भी खरे हैं तालाब और राजस्थान की रजत बूंदे नामक पुस्तकें - अनुपम साहित्यमाला के इन मोतियों को हटा दें, तो पानी के क्षेत्र में कोई ऐसी पुस्तक या रचना नहीं है, जो लोक व्यवहार में हो। एक प्रेक्टिसनर को ज्यादा सटीक व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। किंतु मैं देखता हूं कि अनुपम उस व्यवहार को एक प्रेक्टिसनर से भी ज्यादा सरलता से समाज को परोसना जानते थे। उसे समाज के मन में उतार देना. बिठा देना; यही अनुपम का अनुपम गुण था। इसी गुण के कारण अनुपम, नये ज़माने के लोगों के बीच में भी पुरातन ज्ञान का लोहा मनवाने में सफल रहे। इसी गुण के कारण मैं अनुपम को सिर्फ लेखक-साहित्यकार न कहकर एक अभ्यासक भी मानता हूँ।

प्र. - आपकी निगाह में अनुपम जी का सबसे बड़ा योगदान क्या रहा ?

उ. - मेरी निगाह में अनुपम भाई का सबसे बड़ा योगदान सतत् चलने वाली उनकी वह कोशिश थी, जिसके जरिये वह पानी का काम करने वाले अनेक दूसरे अनेक साथी बनाने और उन्हें बढ़ाने में सफल रहे। मुझे ध्यान है। गोपालपुरा की पश्चिमी पहाड़ी के तालाब से पानी निकालने के लिए तालाब की प्रकृति अनुकूल जगह छोड़ी थी। अनुपम ने देखा, तो बोले - "यहां एक छोटी सी, सुंदर सी दीवार बना दो। उस पर 'अपरा' लिख दो।" मैंने पूछा - "इससे क्या होगा ?" अनुपम बोले - "यह दीवार पाल पर चढ़ने के काम आयेगी। यह एक लाभ होगा। दूसरा बड़ा लाभ यह होगा कि इससे पानी का संस्कार आगे जायेगा। यदि हमें तालाबों को अगली पीढ़ी को दिखाना है, समझाना है, आगे बढ़ाना है तो तालाबों के अंग-प्रत्यंगों को शब्दों में प्रस्तुत करना भी सीखें।" अनुपम की बात गहरी थी। बाद में मैंने दीवार बनवाई और उस पर 'अपरा' भी लिखा। मुझे भरोसा है कि अनुपम के बनाये लोग, अनुपम की अनुपस्थिति से तत्काल उभरे शून्य को आगे चलकर भरेंगे।

प्र. - तरुण भारत संघ के काम में भी अनुपम जी का कोई योगदान रहा है ?

उ. - तरुण भारत संघ आकर पानी का काम शुरू कराने और उसे आगे बढ़ाने में यदि सबसे ज्यादा किसी का योगदान है, तो अनुपम जी भाईसाहब का। यदि मैं सबसे ज्यादा कहता हूँ तो इसका मतलब है, मुझसे भी ज्यादा। चाहे भांवता का सिद्धसागर हो या कोई और खास कार्य, अनुपम का शिक्षण व साथ हमें हर जगह मिला। एक बार पांच पेड़ लगाने को लेकर कलक्टर ने मुझ पर जुर्माना ठोक दिया था। अनुपम जी को पता चला, तो वह चण्डीप्रसाद भट्ट, प्रभाष जोशी और अनिल अग्रवाल को लेकर वहां पहुंच गये। प्रभाष जी के कहने पर मुख्यमंत्री द्वारा कलक्टर का ट्रांसफर आदेश भी जारी हो गया। मैं खुश हुआ कि देखो, यह कलक्टर ही गड़बड़ कर रहा था। इससे मुक्ति मिली। अब अनुपम जी की कुशलता देखो। उन्हें हमारी व हमारे काम की छवि की भी चिंता थी। उन्होंने मुझे फोन करके कहा कि कलक्टर को सम्मान देकर विदा करना। उन्होंने मुझे समझाया - "तुम्हें अलवर में काम करना है। लोगों के बीच में प्रेम बढ़ाना है। इसलिए ऐसा करना अच्छा होगा।" मैंने वैसा ही किया। कलक्टर को खुद जाकर आमंत्रित किया। मांगू पटेल के चैक में खीर बनवाई। जिन बंजारों के कारण विवाद था, उन्हें भी न्योता। कलक्टर को बाकायदा गणेश जी की प्रतिमा देकर विदा किया। पग-पग पर टोकना, संभालना, थपथपाना। इसे मैं कम योगदान नहीं मानता। तरुण भारत संघ का मतलब ही है, अनुपम मिश्र। भाभी मंजुश्री, बेटा शुभम..सभी का श्रम तरुण भारत संघ में लगा है। अनुपम नहीं होते, तो तरुण भारत संघ के काम को कोई नहीं जान पाता।

प्र. - पानी-पर्यावरण और इससे इतर क्षेत्रों में शोषण, अत्याचार, अनाचार के खिलाफ कई आंदोलन इस बीच देश में चले हैं। मुझे नहीं याद पड़ता कि उन्हें लेकर अनुपम जी कभी उत्तेजित हुए हों अथवा उन्होंने उनमें कभी सक्रिय योगदान दिया हो। इसकी वजह आप क्या मानते हैं - अनुपम जी का स्वभाव या आंदोलनों को लेकर अनुपम जी का कोई खास दृष्टिकोण ?

उ. - अनुपम जी की मान्यता थी कि राज पर विकास का भूत चढ़ा है। इस भूत की सवारी जब तक रहेगी, विकास के नाम पर विनाशक कार्य चलते रहेंगे। चूंकि वह अत्यंत विद्वान और दूरदृष्टा थे, अतः वह जिन कामों के बारे में देखे लेते थे कि हम इन्हे रोक नहीं पायेंगे, उनमें सक्रिय नहीं होते थे। अपनी ऊर्जा का उपयोग अन्यत्र करते थे। लेकिन ऐसा नहीं था, कि वह ऐसे कार्यों से बेखबर रहते थे। वे आंदोलन व आंदोलनकारियों का हालचाल बराबर रखते थे। यमुना नदी में खेलगांव निर्माण के खिलाफ चले यमुना सत्याग्रह में यूं वह कभी नहीं आये, लेकिन जब तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने लालकिले की प्राचीर से नदियों की शुद्धि की बात की तो खुद गये और कहा - "राजेन्द्र, तुम्हारी बात सरकार ने मान ली है। अब यह सत्याग्रह पूर्ण करो।" वह दूर रहते थे, लेकिन आंदोलनों से विरत नहीं रहते थे। ऐसे कामों में लगे साथियों को समर्थन देते थे। जीत हो, तो पीठ थपथपाते थे। वैसे वह अत्यंत विनम्र थे, लेकिन अच्छा काम करने वालों के बुरे वक्त में सहारा देने को लेकर अत्यंत निर्भीक भी थे।

प्र. - आपसे आखिरी मुलाकात में अनुपम जी ने कुछ ऐसा कहा, जो उनके चाहने वालों को आगे का काम बताये ?

उ.- पता है, उन्हें अक्सर गुस्सा नहीं आता था। पिछली बार जब मैं उनसे मिलने गया था, तो बहुत गुस्से में थे। बोले - "यह सरकार कुछ भी कर ले, गंगा साफ नहीं कर सकती। ये तो सारे प्रोग्राम, सारा पैसा..सब ठेकेदारों के लिए हो रहा है। गंगा को प्रेम और समर्पण चाहिए। राजेन्द्र, यह कैसे संभव हो ? फिर शांत हुए, तो बोले - " राजेन्द्र, तालाबों का काम ही टिकेगा ; बाकी तो सब लुटेगा। तालाबों के काम पर ही जोर लगाने की जरूरत है।" वह लूट की छूट और समाज की टूट से भी दुखी थे। समाधान में वह बताते रहे कि जो समाज बंधे-जोहड़ों को बनाता था, बंधे-जोहड़ कैसे उस समाज को जोड़ने वाले साबित होते थे। बोले कि तालाबों का काम चलते रहना चाहिए। सरकार, तालाबों का काम आगे बढ़ाने के लिए कोई अथॉरिटी ही बना दे। इसी से कुछ काम आगे बढ़े। जैसी मेरी आदत है, मैंने कहा - "भाईसाहब, अथॉरिटी बनाने से क्या होगा ? रेनफेड अथॉरिटी बनी तो है। उसका हथ्र हम सभी देख रहे हैं। तालाबों की अथॉरिटी भी ऐसे ही सरकारी रवैये वाली होगी, तो उसके भी प्लान और पैसे ठेकेदारों की जेब में रहेंगे।" खैर, मैं कह सकता हूँ कि जीवित अनुपम की आत्मा, उनकी देह से ज्यादा, तालाबों में वास करती थी। भारत ही नहीं, दुनिया में कहीं भी तालाब जितने सुंदर व श्रेष्ठ होंगे, अनुपम की आत्मा उतना ही अधिक सुख पायेगी।

✖ परिचय :-

अरुण तिवारी

लेखक ,वरिष्ठ पत्रकार व सामाजिक कार्यकर्ता

1989 में बतौर प्रशिक्षु पत्रकार दिल्ली प्रेस प्रकाशन में नौकरी के बाद चौथी दुनिया साप्ताहिक, दैनिक जागरण-दिल्ली, समय सूत्रधार पाक्षिक में क्रमशः उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक कार्य। जनसत्ता, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नई दुनिया, सहारा समय, चौथी दुनिया, समय सूत्रधार, कुरुक्षेत्र और माया के अतिरिक्त कई सामाजिक पत्रिकाओं में रिपोर्ट लेख, फीचर आदि प्रकाशित। 1986 से आकाशवाणी, दिल्ली के युववाणी कार्यक्रम से स्वतंत्र लेखन व पत्रकारिता की शुरुआत। नाटक कलाकार के रूप में मान्य। 1988 से 1995 तक आकाशवाणी के विदेश प्रसारण प्रभाग, विविध भारती एवं राष्ट्रीय प्रसारण सेवा से बतौर हिंदी उद्घोषक एवं प्रस्तोता जुड़ाव।

इस दौरान मनभावन, महफिल, इधर-उधर, विविधा, इस सप्ताह, भारतवाणी, भारत दर्शन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण ओ बी व फीचर कार्यक्रमों की प्रस्तुति। श्रोता अनुसंधान एकांश हेतु रिकार्डिंग पर आधारित सर्वेक्षण। कालांतर में राष्ट्रीय वार्ता, सामयिकी, उद्योग पत्रिका के अलावा निजी निर्माता द्वारा निर्मित अग्नि लहरी जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के जरिए समय-समय पर आकाशवाणी से जुड़ाव।

1991 से 1992 दूरदर्शन, दिल्ली के समाचार प्रसारण प्रभाग में अस्थायी तौर संपादकीय सहायक कार्य। कई महत्वपूर्ण वृत्तचित्रों हेतु शोध एवं आलेख। 1993 से निजी निर्माताओं व चैनलों हेतु 500 से अधिक कार्यक्रमों में निर्माण/निर्देशन/ शोध/ आलेख/ संवाद/ रिपोर्टिंग अथवा स्वर। परशेप्शन, यूथ पल्स, एचिवर्स, एक दुनी दो, जन गण मन, यह हुई न बात, स्वयंसिद्धा, परिवर्तन, एक कहानी पत्ता बोले तथा झूठा सच जैसे कई श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम। साक्षरता, महिला सबलता, ग्रामीण विकास, पानी, पर्यावरण, बागवानी, आदिवासी संस्कृति एवं विकास विषय आधारित फिल्मों के अलावा कई राजनैतिक अभियानों हेतु सघन लेखन। 1998 से मीडियामैन सर्विसेज नामक निजी प्रोडक्शन हाउस की स्थापना कर विविध कार्य।

संपर्क :- ग्राम- पूरे सीताराम तिवारी, पो. महमदपुर, अमेठी, जिला- सी एस एम नगर, उत्तर प्रदेश , डाक पता: 146,
सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली- 92 Email:- amethiarun@gmail.com . फोन संपर्क:
09868793799/7376199844

Disclaimer : The views expressed by the author in this feature are entirely his own and do not necessarily reflect the views of INVC NEWS.

URL : <https://www.internationalnewsandviews.com/anupam-memory-who-now-hold-my-shirt-kinchega-rajendra-singh/>



12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.
